بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 11 अप्रैल 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

खैबर के युद्ध तथा ज़ातुर्रिक़ा नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरते नबवी स. का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-11.04.2025

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- खैबर के युद्ध के बाद की कुछ घटनाएं बयान हो रही हैं, इसमें तेमा नामक क्षेत्र वालों से सन्धि की घटना भी है। तेमा नामक स्थान मदीने से शाम देश के रास्ते में एक प्रसिद्ध नगर था। तेमा वालों ने स्वंय आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में सन्धि का प्रस्ताव दिया था, जिसे आप स. ने स्वीकार फ़रमाया और तेमा के यहूदियों को अपनी सम्पदा के साथ अपने क्षेत्र में रहने की अनुमति दे दी। उसी अवसर पर फज्र की नमाज़ में देरी होने का भी वर्णन मिलता है। उसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों सहित खैबर के युद्ध से लौटते समय पूरी रात चलते रहे, फिर जब आप स. को नींद आई तो मदीने के निकट विश्राम के लिए पड़ाव किया और बिलाल रज़ी. से फ़रमाया कि आज की रात तुम हमारी नमाज़ के समय सुरक्षा करो। हज़रत बिलाल रज़ी. जागने के लिए नफ़ल पढ़ते रहे और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबा सो गए। जब फज्र का समय निकट आया तो हज़रत बिलाल रज़ी. ने अपनी सवारी का सहारा लिया तो हज़रत बिलाल रज़ी. की भी आँख लग गई। अतः न रसूलुल्लाह स. और सहाबा रज़ी. में से किसी की आँख खुली और न ही हज़रत बिलाल रज़ी. की आँख खुली, यहाँ तक कि धूप उन लोगों पर पड़ी और फिर रसूलुल्लाह स. सबसे पहले जागे। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को चिन्ता हुई और आप स. ने बिलाल रज़ी. से पूछताछ की। फिर आप स. ने वहाँ से चलने का निर्देश दिया और थोड़ी दूर जाकर रसूलुल्लाह स. ने वज़ू किया और सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ाई। हुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति नमाज़ अदा करना भूल जाए उसे चाहिए कि याद आने पर उसे पढ़ ले क्यूंकि अल्लाह ने फ़रमाया कि नमाज़ को मेरी याद के लिए क़ायम करो।

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ी. बयान करते हैं कि मदीना वापस आते हुए लोग उच्च स्वर में तकबीर कहने लगे तो आँहुज़ूर स. ने फ़रमाया- अपनी आवाज़ें धीमी रखो, तुम किसी बहरे अथवा अनुपस्थित को नहीं पुकार रहे।

मुसलमानों की यह यात्रा जो मुहर्रम सात हिजरी को शुरू हुई थी, ख़ुदा तआला के फ़ज़ल एवं अनुकम्पाएं समेटते हुए सिफ़र के महीने के अन्त अथवा रबीउल अव्वल के आरम्भ में पूरी हुई।

मुसलमानों के समर्थन में अनेक अनुकम्पाएं प्रकट हुईं जिनका एक मूल भूत प्रभाव यह हुआ कि अरब देश में आस पास के अनेक क़बीले जो मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्रों की योजना बना रहे थे, भयभीत हो गए, कई क़बीलों ने स्वंय आकर सन्धि का हाथ बढ़ाया, कुछ ने आज्ञा पालन करना उचित समझा। खैबर में विजय का एक बड़ा प्रभाव यह हुआ कि अरब महादीप में यहूदियों का वर्चस्व समाप्त होकर रह गया। फिर इस विजय का मुसलमानों की आर्थिक स्थिति पर अति सकारात्मक प्रभाव पड़ा। हज़रत आयशा रज़ी. सहित कई सहाबी बयान करते हैं कि खैबर की विजय के बाद हमें पेट भर खाना नसीब होता था।

इसके बाद ज़ातुर्रिक़ा नामक युद्ध का वर्णन है, इस लड़ाई के नाम का कारण यह है कि इस इलाक़े में एक वृक्ष अथवा पहाड़ था जिसके नाम पर इस युद्ध का यह नाम पड़ गया, एक अन्य कारण यह बयान किया जाता है कि इस लड़ाई में सहाबियों के पास सवारियों का अभाव था और यात्रा के कठिन पड़ाव तथा पथरीली धरती पर चलने के कारण सहाबियों के पाँव ज़ख़्मी हो गए थे और वे फटे पुराने कपड़ों में से पट्टियां बनाकर घावों पर बांधते थे, कपड़ों की पट्टियों को चूंकि रिक़ा कहा जाता है, इस लिए इस युद्ध का यह नाम पड़ गया।

इस युद्ध के समय निर्धारण में मतभेद है। सीरत एवं इतिहास की पुस्तकों में इसका वर्ष 4 या 5 हिजरी लिखा है, जबकि इमाम बुख़ारी ने एक सुदृढ़ साक्ष्य के आधार पर इसे खैबर के युद्ध के बाद 7 हिजरी में घोषित किया है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने भी अपने नोट्स में इसे खैबर के युद्ध के बाद 7 हिजरी में रखा है। इस युद्ध का कारण यह हुआ था कि नजद के इलाक़े में कुच्छ डाकू एवं लुटेरे यात्रियों को तंग किया करते थे, जिन पर क़ाबू पाना कठिन हो रहा था। इसी प्रकार इस युद्ध का एक कारण यह भी बयान किया जाता है कि एक व्यापारी मदीने से आया और उससे मदीने वालों को यह सूचना मिली कि सअलबा वाले तथा अन्य क़बीले मुसलमानों के विरुद्ध सेना लेकर चढ़ाई करने का इरादा रखते हैं। रसूलुल्लाह स. को यह सूचना मिली तो आप स. ने इस पर अभियान चलाने का इरादा फ़रमाया। आप स. मदीने से चार सौ, सात सौ अथवा आठ सौ साथियों के साथ इस युद्ध के लिए रवाना हुए।

इस लड़ाई में नमाज़े खौफ़ (भय की स्थिति में नमाज़) अदा किए जाने का भी वर्णन है। हज़रत जाबिर रज़ी. की रिवायत है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम नख़ल से जातुर्रिक़ा गए और वहाँ गत्फ़ान की सेना से आमना सामना हुआ परन्तु कोई लड़ाई नहीं हुई, लेकिन आमने सामने होते हुए हमले का भय बना रहा, उस दौरान जब नमाज़ का समय हुआ तो आप स. ने नमाज़-ए-खौफ़ अदा फ़रमाई, अर्थात ऐसी नमाज़ जिसमें आधे लोग आधी नमाज़ में शामिल हुए और फिर पीछे हट गए और शेष आधे लोग आ गए और उन्होंने भी आप स. के साथ नमाज़ पढ़ी। इस नमाज़ का वर्णन सूरः निसा में फ़रमाया गया है कि ऐसी भय की स्थिति में किस प्रकार नमाज़ पढ़ी जाए। बुख़ारी की व्याख्या करने वाले अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी लिखते हैं कि भय वाली नमाज़ के विषय में मतभेद है कि पहली बार किस साल में इसके विषय में आदेश नाज़िल हुआ। अधिकांश विद्वानों का कहना है कि जातुर्रिक़ा नामक युद्ध में यह नमाज़ पहली बार पढ़ी गई, परन्तु इसका आदेश कब नाज़िल हुआ, इसमें विद्वानों का मतभेद है, किसी ने इसका आदेश 4,

किसी ने 5, किसी ने 6, और किसी ने 7 हिजरी कहा है। पन्द्रह दिन के इस अभियान के बाद आप स. वापस मदीने की ओर रवाना हुए।

इस युद्ध अभियान को चमत्कारी युद्ध भी कहा गया है। आप स. पर एक दुश्मन की ओर से तलवार सूंते जाने की घटना इसी युद्ध के दौरान पेश आई थी।

इसी लड़ाई के दौरान एक पक्षी वाली घटना भी हुई, जिसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है कि इस अभियान के दौरान सहाबियों रज़ी. में से एक व्यक्ति आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पक्षी का एक बच्चा लेकर आया, आँहुज़ूर स. उसकी ओर देख रहे थे कि उस पक्षी की माँ या बाप में से एक ने उस सहाबी के सामने स्वंय को गिरा लिया, मानो अपने आपको उस सहाबी के हवाले कर दिया। लोग इस दृश्य को आश्चर्य से देख रहे थे। आँहुज़ूर स. ने इस घटना पर फ़रमाया कि तुम लोग इस पक्षी पर आश्चर्य करते हो, तुमने इसके बच्चे को पकड़ लिया है, और यह पक्षी अपने बच्चे को आज़ाद करवाने के लिए अपना आप तुम्हारे सामने पेश कर रहा है। अल्लाह की क़सम! तुम्हारा रब इस पक्षी के अपने बच्चे पर दया करने से अधिक तुम पर दयावान है।

इसी तरह इस युद्ध के दौरान एक जिन्नातों के प्रभाव में आये हुए बच्चे के स्वस्थ होने की घटना भी बयान हुई है। एक ग्रामीण स्त्री आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई और कहा कि यह मेरा बेटा है, इस पर जिनों के आने का दौरा पड़ता है। आँहुज़ूर स. ने अपने पवित्र मुंह की लार उस बच्चे के मुंह में डाली और तीन बार फ़रमाया के ऐ अल्लाह के दुश्मन! इससे दूर हो जा, मैं अल्लाह का रसूल हूँ, फिर आदेश दिया कि अब इस बच्चे को ले जाओ, अब इसे यह रोग फिर कभी नहीं होगा।

हज़रत जाबिर रज़ी. से रिवायत है कि इस युद्ध के दौरान अल्बा बिन ज़ैद हारसी आँहुज़ूर स. की सेवा में तीन अंडे लेकर आए, आँहुज़ूर स. ने फ़रमाया कि ऐ जाबिर! यह अंडे ले लो और इन्हें पकाओ। जाबिर रज़ी. कहते हैं- मैंने वे अंडे पकाए और फिर रोटी तलाश की, किन्तु नहीं मिली। इस पर आँहुज़ूर स. और आप स. के साथी रोटी के बिना ही वे अंडे खाने लगे, यहाँ तक कि उनके पेट भर गए परन्तु प्याले में वे अंडे उसी प्रकार मौजूद थे। फिर सहाबियों रज़ी. में से अनेक लोगों ने उसमें से खाया, और फिर हम आगे रवाना हो गए।

इसी यात्रा के समय एक ऊँट हुज़ूर स. के पास तेज़ी से आया और उसने बिलबिलाना शुरू कर दिया। आँहुज़ूर स. ने फ़रमाया कि क्या तुम जानते हो कि इस ऊँट ने क्या कहा है? यह अपने मालिक की शिकायत कर रहा है कि इसका मालिक कई वर्षों से इससे सेवा ले रहा है और वह इसे काटने का इरादा रखता है। आप स. ने उसके मालिक से उस ऊँट को ख़रीद कर जंगल में चरने के लिए छोड़ दिया।

इस युद्ध अभियान में हज़रत जाबिर रज़ी. का ऊँट गुम हो गया था, आप रज़ी. बयान करते हैं कि एक अंधेरी रात में मेरा ऊँट गुम हो गया। मैं उसकी खोज में हुज़ूर स. के निकट से गुज़रा, और आप स. के पूछने पर बताया कि मेरा ऊँट गुम हो गया है, तो आप स. ने फ़रमाया कि तेरा ऊँट अमुक स्थान पर है, जा और उसे ले ले। जाबिर रज़ी. कहते हैं कि मैं उस जगह पर गया किन्तु ऊँट मुझे वहाँ न मिला। मैं वापस आप स. की सेवा में उपस्थित हुआ तो आप स. ने दोबारा वहीं जाने का इरशाद फ़रमाया, मैं दोबारा वहां गया परन्तु ऊँट न मिला। इस पर आप स. प्रेम भाव से मेरे साथ वहां गए, यहाँ तक कि हम ऊँट तक पहुँच गए, फिर आप स. ने मुझे ऊँट पकड़ा दिया।

अतः इस युद्ध अभियान में कई चमत्कारों का वर्णन है, उदाहरणतः इसी युद्ध के समय हज़रत जाबिर रज़ी. का एक ऊँट सुस्त हो गया था। नबी करीम स. ने कुछ पानी लेकर उस पर फूँक मारी और उस

ऊँट की कमर, सिर और पीठ पर वह पानी छिड़क दिया। फिर आप स. ने सोंटी से उस ऊँट पर कई बार चोट मारी जिसके कारण वह ऊँट तेज़ हो गया।

इसी तरह इस युद्ध अभियान में कुंड में पानी भर जाने एवं चमत्कारी बरकत की घटना भी मिलती है। नबी करीम स. के इसी प्रकार के चमत्कारों के विषय में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- इस स्तर तक (अल्लाह तआला की) निकटता में कई बार इंसान से ऐसी बातें घटित होती हैं कि जो मानव शक्ति से बढ़ी हुई लगती हैं तथा इलाही शक्ति का रंग अपने अन्दर रखती हैं, जैसे हमारे सय्यद-ओ-मौला सय्यदुर्रुसुल हज़रत ख़ात्मुल अम्बिया सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र की लड़ाई में एक कंकरियों से भरी मुट्ठी काफ़िरों पर चलाई और वह मुट्ठी किसी दुआ के माध्यम से नहीं बल्कि स्वंय अपनी आत्मशक्ति से चलाई, परन्तु उस मुट्ठी ने ख़ुदाई शक्ति दिखलाई और विरोधियों की सेना पर उसका ऐसा चमत्कारी प्रभाव पड़ा कि कोई उनमें से ऐसा न रहा कि जिसकी आँख पर उसका प्रभाव न पहुंचा हो और वे सब अंधों की भांति हो गए और ऐसी व्याकुलता एवं कष्ट उनमें पैदा हो गया कि मूर्छित लोगों की तरह भागना शुरू कर दिया। इसी चमत्कार की ओर अल्लाह जल्लाशानुह इस आयत में संकेत फ़रमाता है- وما رميت اذ رميت ولكن الله رمى अर्थात जब तू ने इस मुट्ठी को फेंका, वह तू ने नहीं फेंका बल्कि ख़ुदा तआला ने फेंका, अर्थात गुप्त रूप से इलाही शक्ति काम कर गई, मानव शक्ति का यह काम न था।

और ऐसा ही दूसरा चमत्कार आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का, जो शक़्क़ुल-क़मर (चाँद का दो भागों में विभाजित होना) है इसी इलाही शक्ति के कारण घटित हुआ था कि कोई दुआ उसमें शामिल न थी, क्यूंकि वह केवल उंगली के इशारे से, जो इलाही शक्ति से भरी हुई थी, घटित हो गया था तथा इसी प्रकार की अनेक अन्य घटनाएं भी हैं जो केवल व्यतिगत चमत्कार के रूप में आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिखलाईं और जिनके साथ कोई दुआ न थी। कई बार थोड़े से पानी को जो केवल एक प्याले में था अपनी उंगलियों को उस पानी में डालने से इतना अधिक मात्रा में हो गया कि समस्त सेना एवं ऊँट तथा घोड़ों ने वह पानी पिया और फिर भी वह पानी वैसा ही अपनी मात्रा में उपलब्ध था, और कई बार दो चार रोटियों पर हाथ रखने से हज़ारों भूखों प्यासों के पेट इनसे भर दिया और कई बार थोड़े दूध को अपने होंटों से बरकत देकर एक पूरी जमाअत का पेट भर दिया, तथा कई बार विषयुक्त कुँए में, अर्थात नमकीन पानी के कुँए में अपने मुंह की लार दाल कर उसको अत्यंत मीठा कर दिया, और कई बार अति रोग ग्रस्त लोगों पर अपना हाथ रख कर उनको स्वस्थ कर दिया, तथा कई बार आँखों को जिनके डेले लड़ाई के कारण बहार निकल आए थे अपने हाथ की बरकत से पुनः लगा दिया, ऐसे ही अन्य अनेक काम अपने व्यतिगत सामर्थ्य से किए जिनके साथ एक गुप्त ईश्वरीय शक्ति मिली हुई थी। अल्लाहुम्मासल्ली अला मुहम्मद व आले मुहम्मद व बारिक व सल्लिम इन्नाका हमीदुम्मजीद।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131